Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Paper

भारतीय शिक्षा प्रणाली और संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. अनीता धाकड़

असिस्टेंट प्रोफेसर, ज्योति महिला विद्यापीठ महला, जयपुर, राजस्थान,भारत

Corresponding Author: * डॉ. अनीता धाकड़

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18127465

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ जिले की 12 B.Ed. कॉलेज में शिक्षण कार्य कर रहे 120 छात्र अध्यापकों तथा उनके 540 विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया है वर्तमान शोध अध्ययन छात्र अध्यापकों की शैक्षिक प्रभावशीलता का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है। शिक्षकों ,छात्रों तथा महाविद्यालयों का चयन यादृचछिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। डाटा संकलन हेतु कुमार एवं मुथा (1999), निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता को प्रयोग में लाया गया है। यह अध्ययन यह निष्कर्ष प्रदान करता है कि छात्र अध्यापकों की शिक्षक प्रभावशीलता का उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। यद्यपि शिक्षक प्रभावशीलता विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एकमात्र निर्धारक नहीं है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 06-12-2025
- ✓ **Accepted:** 28-12-2025
- ✓ **Published:** 02-01-2026
- ✓ **MRR:3(1):**2025;63-65
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

अनीता धाकड़. भारतीय शिक्षा प्रणाली और संस्कृति पर वैष्वीकरण का प्रभाव. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(1):63-65.

मुख्य शब्द: वैश्वीकरण, शिक्षा, निजीकरण, संस्कृति तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी).

प्रस्तावना

वैश्वीकरण की पारिभाषिक पृष्ठ भूमि

वैश्वीकरण शब्द 'विश्व' शब्द से बना है। जिससे अर्थ निकलता है कि यह एक व्यापक अवधारणा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा कहा गया था "मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खडी हुई दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे व खिडकियाँ बन्द कर जाऐ मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आस-पास देश-विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे।" भारत जैसे विशाल देश में प्राचीन काल से ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना का पालन किया गया है। वर्तमान युग संचार व तकनीक का है जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व एक छत के नीचे सिमट कर आ गया है और सभी क्षेत्रों में देशों की परस्पर एक दूसरे के ऊपर निर्भरता बढ़ी है।

वैश्वीकरण: एक प्राचीन अवधारणा

प्राचीन समय में शिक्षा प्राकृतिक वातारण में गुरुकुल में व्याख्यान विधि से दी जाती थी। जिसके अन्तर्गत गुरू शिष्य अनुशासन में रह कर शिष्टतापूर्वक शिक्षण कार्य करते थे। भारत जैसे विशाल देश में कई विष्वविद्यालय ऐसे थे जहाँ देश-विदेश से शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे जैसे-तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला,।

वैश्वीकरण: समसामयिक अवधारणा

बाजार मण्डी तथा प्रतिस्पर्धाओं ने शिक्षा जगत को भी प्रभावित किया है। पिछले कुछ वर्षों से भारत में वैष्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था तथा भारतीय व समाज व शिक्षा पर दूरगामी प्रभाव डाले हैं। वैसे तो पिछले 50 वर्षों से हुए आर्थिक विकास में भारतीय समाज की सामाजिक व आर्थिक उपव्यवस्थाओं को प्रभावित किया है तथापि

© 2025 डॉ. अनीता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने शिक्षा के क्षेत्र को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण के शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण के प्रभाव से देश में साक्षरता का स्तर उन्नत हुआ है तथा देश में शिक्षा सुविधाओं में अधिक वृद्धि हुई है जैसे तकनीकी/ इन्टरनेट, मोबाइल का प्रयोग। प्राचीन समय में शिक्षा, शिक्षक केन्द्रित थी वर्तमान में शिक्षक का स्थान बालक ने ले लिया है।

वर्तमान में शिक्षा बालक को केन्द्र बनाकर दी जाती है। वर्तमान में स्व-क्रिया द्वारा बालक के सीखते पर बल दिया जाता है।

बालक को प्रकृति अर्थात् उत्तकी रूचि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान की जाती है।

वैश्वीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप बालक क्रियाशील होकर शिक्षण कार्य करता है। कक्षा शिक्षण में बालक सक्रिय रूप से भागीदार बन कर अधिगम करता है।

शिक्षा प्रणाली में सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीकी के प्रयोग की सफलताओं को बढ़ाना।

रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन करना।

शिक्षा द्वारा संस्कृतिकरण को बढ़ावा देना।

नवीन शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध कराना।

21वीं सदी में शिक्षक शिक्षार्थी के लिए सूचना एवं संचार तकनीक (**ICT**) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में शिक्षा के सम्पूर्ण क्षेत्र में सूचना एवं संचार तकनीक का उपयोग हो रहा है जैसे- ई-लर्निंग, ई-पाठशाळा , दूरस्थ शिक्षा, प्रोजेक्टर आदि। कम्प्यूटर सहायक अधिगम एक ऐसी प्रणाली है जिसमें एक छात्र आवश्यक अधिगम सामग्री से युक्त कम्प्यूटर के माध्यम से अंतः क्रिया करता है। इस अधिगम का उद्देश्य यह होता है कि विद्यार्थी अपनी योग्यता व गति के अनुसार व्यक्तिगत रूप से स्व-अधिगम करता हुआ वांछित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। शिक्षा में दिन-प्रतिदिन नये-नये प्रयोग व शोध कार्य हो रहे हैं। प्रयोगों का विश्लेषण करने व निष्कर्षों तक पहुँचने में कम्प्यूटर से सहायता मिलती है। मल्टीमीडिया के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले पाठ या विषयवस्तु को मल्टीमीडिया से चित्र एनीमेशन का प्रयोग कर अधिक रोचक बनाए जा सकते हैं। विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा कक्ष का प्रयोग ही वैश्वीकरण की ही देन है।

अधिगम में निर्मितिवाद व सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग भी वैश्वीकरण का परिणाम है। निर्मितिवाद शिक्षण शास्त्र में नया है। इसमें बालक पूर्व अनुभव द्वारा नया ज्ञान अर्जित करते हैं। सहयोगात्मक अधिगम एक सामूहिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा सभी विद्यार्थियों को सीखने के समान अवसर प्राप्त होते हैं तथा हरेक विद्यार्थी अपने साथी का सीखने में सहयोग करता है जैसे श्रपबेंू डमजीवक । स्विटजरलैण्ड के शिक्षा शास्त्री जीन पियाजे व रूसी शिक्षा शास्त्री वाइगोत्सकी के अध्ययनों के द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुए जिनके द्वारा हम अध्यापन कार्य को प्रभावशाली बना सकते हैं जिन्हे की वैश्वीकरण के द्वारा ही हम जान पाए हैं।

वैश्वीकरण के शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के भारतीय समाज पर विभिन्न प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत होते हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यदि गहनता से विश्लेषण किया जाए तो प्रतीत होगा कि वैष्वीकरण की विभिन्न उपलब्धियों के उपरान्त वैश्वीकरण भारत में पाई जाने वाली सभी समस्याओं के समाधान के लिए संजीवनी बूटी नहीं है।

वैष्वीकरण से बुनियादी शिक्षा, माध्यमिक व उच्च शिक्षा की स्थिति में जहाँ एक ओर सुधार हुआ है वहीं पर शिक्षा की निजीकरण के कारण इसकी गुणवत्ता में आशा के अनुरूप सुधार नहीं हुआ है। लेकिन इसके प्रभाव से एक वर्ग विशेष को ही लाभ पहुँचा है व ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इसका अभाव है। शिक्षा दिन-प्रतिदिन आम व्यक्ति तथा निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की पहुँच से दूर होती जा रही है। वर्तमान समय में कोई देश आत्मनिर्भर नहीं है। अधिकांश समस्याएं विश्व स्तर की हैं जैसे- जनसंख्या वृद्धि, भूकम्प, बाढ़, आतंकवाद आदि इनका समाधान भी वैश्विक स्तर पर सम्भव है। वैश्वीकरण से इन समस्याओं व इनके समाधानों को पाठ्यक्रम में जोडा गया है। आज महँगी शिक्षा पद्धति के कारण एक तरफ धनी तो दूसरी तरफ निर्धन लोगों का देश बनकर रह गया है।

- ➢ विश्वविद्यालयों में सरकार द्वारा अपेक्षित आर्थिक संसाधनों में कटौती की जा रही है। जिसके कारण विद्यालय व महाविद्यालय अपने संसाधनों की पूर्ति हेतु अपनी फीस में कई गुना वृद्धि कर रहे हैं। इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर हो रहा है।
- ➢ वर्तमान में वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा का विकास ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में अधिक हुआ है। वैश्वीकरण ने शिक्षा क्षेत्र की सर्वग्राहिता को ठेस पहुँचायी है। इसका प्रभाव देश के उस वर्ग पर पड़ा है जो कि साधन सम्पन्न नहीं है।
- ➢ वर्तमान में शिक्षा का बाजारीकरण ही नहीं हुआ वरन् व्यापार बन गया है। इसे बाजार में निश्चित शुल्क से अधिक धन देकर खरीदा जा सकता है। इससे देश की प्रतिभाएँ कुण्ठित हो रही है। शिक्षा एक व्यापारिक प्रक्रिया तक सीमित रह गई है।
- ➢ इससे विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बालकों से हम नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा जागृत करना चाहते हैं। नैतिक शिक्षा थोपी नहीं जाती बल्कि बालक स्वयं स्वेच्छा से सदाचार अपनाएं और दैनिक व्यवहार में उन्नयन करें। लेकिन मात्रात्मक वृद्धि की दौड़ में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता नष्ट होती जा रही है।
- ➢ भारत की शिक्षा व्यवस्था अमेरिका व चीन के बाद तीसरे नम्बर पर आती है लेकिन गुणवत्ता में विश्व के शीर्ष 200 विश्विद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है।
- ➢ शिक्षा का उद्देश्य सर्वागीण विकास के स्थान पर धनोपार्जन हो गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में कुछ शिक्षा संस्थाओं ने अपनी शैक्षणिक स्तर में सुधार कर विष्व श्रेष्ठतम शिक्षा संस्थाओं से ज्ञान प्राप्त किये विद्यार्थी अपनी प्रतिभा के अनुसार उचित अवसर न मिल पाने के कारण असंतुष्ट होकर अपने आर्थिक व शैक्षिक विकास के लिए अपनी सेवाओं का प्रदर्शन विदेशों में कर रहे हैं। कुछ विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अमेरिका जैसे देशों में जाते हैं और वहीं बस जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को संगठन की स्थापना की गई है। जो शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक कार्यक्रमों का आयोजन करे जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना का विकास हो।

© 2025 डॉ. अनीता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

वैश्वीकरण एक सतत् प्रक्रिया है। ऋगवेद में लिखा है "आ नो भद्राः कृतवो यन्तु विष्वतः (ऋगवेद 1.89. 1) अर्थात् उत्तम विचार हमारे पास सभी दिशाओं से आयें। हमारी संस्कृति हमेशा विभिन्न प्रकार के विचारों का स्वागत एवं उनको आत्मसात् करती रही है। सांस्कृतिक स्तर पर वैश्वीकरण से नए प्रकार के विचारों से हमारा सामना हो रहा है। वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य पूरे विश्व को एक करना था अर्थात् ऐसा विश्व बनाना जिसमें हरेक देश की संस्कृति को जाना जा सके। वैष्वीकरण का प्रभाव रहन-सहन, खाना-पान मनोरंजन पर भी देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप पश्चिमी संस्कृति हमारे विचारों को प्रभावित कर रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेजी भाषा की लोकप्रियता बढ़ी है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप विष्व संस्कृति की अवधारणा सामने आयी है जिसके कारण विष्व की स्थानीय संस्कृतियों के विलुप्त होने का खतरा है। भारत एक विकासशील राष्ट्र है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में यहाँ के परम्परागत सामाजिक मूल्य भी प्रभावित हुए हैं। भारतीय जीवन शैली, भाषा, परिवार, महिलाओं की स्थिति आदि प्रत्येक क्षेत्र में हम सामाजिक मूल्यों के आरोह-अवरोह परिवर्तन को देख व महसूस कर सकते हैं। वैश्वीकरण के द्वारा हम देश-विदेश की संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त कर पाए हैं। हम कुछ खाते-पीते हैं, पहनते हैं अथवा सोचते हैं इन सब पर वैष्वीकरण का असर नजर आता है। आज वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव को देखते हुए डर है कि यह प्रक्रिया विश्व की संस्कृति को खतरा पहुँचायेगी।

यह उचित है कि हमें विदेशी संस्कृतियों को जानना चाहिए लेकिन उनका अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। जिससे भारतीय सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास ना हो।

निष्कर्ष

शिक्षा समाज का दर्पण है। दीप प्रज्जवलित हो तो बुझे दीपक जला सकेंगे यही शिक्षा का आधार है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार वैष्वीकरण के भी दो पक्ष है-

(1) सकारात्मक

(2) नकारात्मक।

सम्पूर्ण विश्व के साथ चलने के लिए वैष्वीकरण आज की आवश्यकता बन गया है लेकिन हमें इसके सकारात्मक पक्ष को अपनाना होगा। सधन्यवाद।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, एम. उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के संदर्भ में शिक्षक की स्थिति एवं भूमिका। *शिक्षा विमर्श.* मार्च 2017।
2. द्विवेदी, आर. समसामयिक भारत में शिक्षा. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन; 2017।
3. खेमानी, जे. के. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का आलोचनात्मक अध्ययन. अजमेर: अल्का पब्लिकेशन; 2016।
4. स्वामी, ए. के. वैश्विक परिदृश्य एवं भारत. जयपुर: आशीर्वाद पब्लिकेशन; 2016।
5. सिंह, एन., सेवानी, ए. एस. समकालीन भारत में शिक्षा. अजमेर: अल्का पब्लिकेशन; 2016।
6. गौतम, ए. आर्थिक भूगोल के मूल तत्व. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन; 2015।
7. बत्रा, डी. एन. उच्च शिक्षा एवं शिक्षा की चुनौतियाँ। भारतीय शिक्षा. 17 जून 2010।
8. गोस्वामी, एन. पी. उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा. जयपुर: नीलकंठ पुस्तक मन्दिर; 2008।
9. बघेला, एच. एस. शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज. जयपुर: राजस्थान प्रकाशन; 2007।
10. विकाल, जे. के. शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव। *शोधगंगा* [इंटरनेट]. 2007। उपलब्ध: इन्फ्लिबनेट बिटस्ट्रीम।
11. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005. नई दिल्ली: एनसीईआरटी; 2006।
12. सिंह, एन., देवी, एस. भूमंडलीकरण के दौर में शिक्षा पर प्रभाव। *कुरुक्षेत्र* पत्रिका. 2004।
13. ठाकुर, एस. पी. वैश्वीकरण: एक पुनरावलोकन। *प्रतियोगिता दर्पण.* फरवरी 2003।
14. सेंटर फॉर वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स (सीडब्ल्यूयूआर) [इंटरनेट]. उपलब्ध: https://cwur.orgg/2018-19.php

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

About the corresponding author

डॉ. अनीता धाकड़ ज्योति महिला विद्यापीठ, महला, जयपुर (राजस्थान) में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। वे उच्च शिक्षा, शोध एवं अकादमिक विकास के क्षेत्र में सक्रिय हैं। अध्यापन के साथ-साथ वे छात्राओं के बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास में निरंतर योगदान दे रही हैं।

© 2025 डॉ. अनीता धाकड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/